विश्व न्याय मन्दिर

10 जुलाई 2014

विश्व के बहाईयों को,

परम प्रिय मित्रगण,

20 मार्च 2015 का सूर्यास्त 171वें बहाई वर्ष के समाप्त होने का संकेत देगा (अर्थात) बहाई युग के पहले कुल्ल-ए-शय के नौवें वाहिद का समापन। हम पूर्व और पश्चिम के बहाईयों का आह्वान करते हैं कि उस शुभ अवसर पर ऐसी व्यवस्था को अपनाएँ जो बदी कैलेण्डर को सार्वजनिक रूप से लागू कर उन्हें एकसूत्र में पिरो दे।

बहाई शिक्षाओं के क्रमिक प्रकाशन और इन्हें प्रगतिशील रूप से लागू करने के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए बदी कैलेण्डर की व्यवस्था को समयानुकूल लागू किया गया है। बाब ने इस कैलेण्डर और इसके कालों और चक्रों, महीनों और दिनों का परिचय कराया। बहाउल्लाह ने आवश्यक स्पष्टीकरण और परिवर्धन किया, विभिन्न पहलुओं की व्याख्या अब्दुल-बहा द्वारा दी गई और पश्चिम में इसे अपनाने की व्यवस्था शोग़ी एफ़ेन्दी के निर्देशानुसार की गई, जैसा कि 'द बहाई वर्ल्ड' नामक संकलनों में वर्णित है। अभी भी, कुछ इस्लामिक और ग्रेगोरियन तारीखों में पाई जाने वाली विसंगतियों तथा ऐतिहासिक धर्मानुष्ठानों और खगोलीय घटनाओं का पावन लेख में मिलने वाले सुस्पष्ट विवरण से मिलान करने में आने वाली कठिनाइयों ने कुछ प्रश्नों को अनुत्तरित छोड़ दिया है। जब कैलेण्डर सम्बन्धी प्रश्न अब्दुल-बहा और शोग़ी एफ़ेन्दी से पूछे गये तब उन्होंने इस विषय को विश्व न्याय मंदिर के लिये छोड़ दिया। कैलेण्डर के उपयोग में एकरूपता के लिये इसकी अनेक विशेषताओं में तीन का स्पष्टीकरण यहाँ आवश्यक जान पड़ता है: नवरोज के निर्धारण का आधार, पावन युगल जन्म-जयंतियों के चंद्र स्वरूप का सौर वर्ष में समायोजन और बदी कैलेण्डर के अन्तर्गत पावन दिनों की तिथियों का निर्धारण।

बहाउल्लाह अपनी परम पावन पुस्तक में लिखते हैं: "नवरोज का त्यौहार उस दिन पड़ता है जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, भले ही यह प्रवेश सूर्यास्त से एक मिनट पूर्व ही क्यों न हो।" किन्तु इसका विस्तृत विवरण अब तक अपरिभाषित छोड़ दिया गया है। हमने निर्णय लिया है कि तेहरान, आभा सौन्दर्य का जन्म-स्थान, धरती पर वह मानदण्ड निर्धारित करने वाला स्थान होगा जो विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त खगोलीय गणना के आधार पर उत्तरी गोलार्ध में वसंत सम्पात का दिन होगा और वह इस पूरे बहाई जगत के लिये नवरोज का दिन होगा।

युगल जन्म दिनों, बाब का जन्म और बहाउल्लाह का जन्म, के त्यौहार पूर्व में पारम्परिक ढंग से इस्लामिक कैलेण्डर में मुहर्रम के पहले और दूसरे दिन मनाये जाते हैं। बहाउल्लाह इस बात की पुष्टि करते हैं कि "ईश्वर की नज़र में ये दो दिवस एक माने गये हैं।" किन्तु, धर्मसंरक्षक की ओर से लिखे गये एक पत्र में कहा गया है, "इसमें संदेह नहीं कि भविष्य में सभी पावन दिवस सोलर कैलेण्डर (सौर पंचाग) के अनुसार होंगे और यह व्यवस्था की जायेगी कि किस प्रकार पूरे विश्व में युगल त्यौहार मनाये जाएँगे।" अभी तक यह प्रश्न अनुत्तरित रहा है कि किस प्रकार इन पावन दिवसों के अन्तर्भूत चंद्र स्वरूप को सौर कैलेण्डर के संदर्भ में रखा जाये। हमने निर्णय किया है कि इन्हें नवरूज के बाद आठवें नये चाँद के पहले और दूसरे दिन मनाया जायेगा, जिसका निर्धारण तेहरान को केन्द्र बिन्दु मानकर खगोलीय पद्धति द्वारा पहले ही कर लिया जायेगा। इसका परिणाम यह होगा कि साल-दर-साल ये युगल जन्म-जयंतियाँ बदी कैलेण्डर के मशीयत, इल्म और कुदरत महीनों के बीच मनायी जाएँगी अथवा यूं कहें, ग्रेगोरियन कैलेण्डर के मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर के बीच। अगले साल बाब का जन्मदिवस 10 कुदरत को पड़ेगा और बहाउल्लाह का जन्म दिवस 11 कुदरत को। अत्यंत हर्ष और प्रत्याशा के साथ हम बहाई वर्ष 174 और 176 में क्रमशः बहाउल्लाह और बाब के जन्म की द्विशतवार्षिक जयंतियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिसे समस्त बहाई जगत एक समान कैलेण्डर के अनुसार मनायेगा।

शेष बहाई पवित्र दिवसों की तारीखें सौर कैलेण्डर के अधीन बहाउल्लाह, अब्दुल-बहा और शोग़ी एफ़ेंदी के सुस्पष्ट वक्तव्यों के अनुकूल तय की जाएँगी; इतिहास में दर्ज कुछ विसंगतियों को हमने दरकिनार कर दिया है। ये तारीखें हैं: नवरोज - 1 बहा, रिजवान का त्यौहार - 13 जलाल से 5 जमाल, बाब का घोषणा दिवस - 8 अजमत, बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण - 13 अजमत, बाब का शहादत दिवस - 17 रहमत, संविदा-दिवस - 4 कौल, और अब्दुल-बहा का स्वर्गारोहण - 6 कौल।

इन प्रावधानों के कारण जब तक रद्द नहीं किये जाते तब तक कैलेण्डर के लिये और उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं तथा पवित्र दिनों को मनाने से सम्बन्धित पहले दिये गये मार्गनिर्देश तथा स्पष्टीकरण यथावत लागू रहेंगे, जैसे दिन की शुरुआत सूर्यास्त के बाद, काम बंद रखना और वे घड़ियाँ (घंटे) जब कुछ पावन दिनों को मनाया जाता रहा है। भविष्य में परिस्थितिजन्य कारणों से कुछ अतिरिक्त कदम उठाने की जरुरत पड़ सकती है।

प्रस्तुत किये गये निर्णयों से स्पष्ट होगा कि पूरब और पश्चिम के बहाई कैलेण्डर के कुछ भागों को उस कैलेण्डर से अलग पाएँगे जिनके वे अभ्यस्त हो चुके हैं। बदी कैलेण्डर की तारीखों का अन्य कैलेण्डरों के साथ मेल अब नवरोज की तिथि के अनुसार बदल जायेगा। अय्याम-ए-हा

के दिनों की संख्या भी आने वाले सालों में वसंत सम्पात के समय के अनुसार बदलेगी। नवरोज़ के साथ शुरू होने वाले 172वें बहाई वर्ष में ऐसे चार दिन होंगे। बाद में सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को बहाई विश्व केन्द्र में तैयार की गई तालिका प्रेषित की जायेगी जिसमें आने वाली आधी शताब्दी के लिये नवरोज़ और पावन युगल जन्म-जयंतियों की तारीखें दर्ज़ की होंगी।

प्रत्येक युग में एक नये कैलेण्डर को अपनाना दिव्य प्रकटीकरण द्वारा भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वास्तविकताओं को पुनर्गठित करने की शक्ति का प्रतीक है। इसके माध्यम से पवित्र पलों की पहचान बनती है, समय और अन्तरिक्ष में मानव का स्थान परिकल्पित होता है और जीवन-तरंग पुनर्तरंगित होती है। अगले नवरोज़ में बहा के लोगों की एकता को दर्शाने और बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था को प्रकाशित करने की दिशा में एक और ऐतिहासिक चरण से परिचय होगा।

-विश्व न्याय मंदिर

बहाई कैलेण्डर, त्योहार और ऐतिहासिक महत्व की तारीखें

(जे.ई. एसलमौंट की पुस्तक "बहाउल्लाह एण्ड द न्यू एरा" के अंश)

अलग–अलग लोगों द्वारा, अलग–अलग कालों में समय को मापने और तारीखों को तय करने की अलग–अलग प्रणालियाँ अपनाई गई हैं। अभी भी दैनिक इस्तेमाल में विभिन्न कैलेण्डर हैं, मसलन – ग्रेगोरियन पश्चिमी यूरोप में, पूर्वी यूरोप के अनेक देशों में जुलियन, यहूदियों के बीच हिब्रू और मुस्लिम देशों में मुहम्मदी।

बाब जिस युग के अग्रदूत हैं उस युग के महत्व का संकेत देते हुये उन्होंने एक नये कैलेण्डर का श्रीगणेश किया। जैसा कि ग्रेगोरियन कैलेण्डर में है, चन्द्र माह को त्याग सौर वर्ष को अपनाया गया।

एक बहाई वर्ष 19 महीनों का होता है और एक महीना 19 दिनों का (अर्थात् 361 दिन। इन 361 दिनों में अधिदिवस (चार सामान्य तौर पर और पाँच अधिवर्ष में) अठारहवें और उन्नीसवें महीने के बीच जोड़कर सौर वर्ष के अनुरूप कैलेण्डर से मेल कराया गया है। बाब ने महीने के नाम ईश्वर के गुणों के आधार पर दिये। प्राचीन फारसी नववर्ष की तरह बहाई नववर्ष खगोलीय आधार पर तय किया गया जो मार्च के वसंत सम्पात (21 मार्च) को निर्धारित किया गया और बहाई युग का समारम्भ बाब की घोषणा वर्ष के साथ माना गया, अर्थात् सन 1844, 1260 ए.डी.।

भविष्य में यह आवश्यक हो जायेगा कि दुनिया के सभी लोग एक समान कैलेण्डर पर सहमत हों।

अतः यह उपयुक्त जान पड़ता है कि एकता के नये युग के लिये एक नया कैलेण्डर हो, जो किसी प्रकार की आपत्ति और नकल से मुक्त हो जिस कारण दुनिया की बहुत बड़ी आबादी द्वारा एक प्रकार का कैलेण्डर अभी तक नहीं प्रयोग में लाया जा सका। यह समझ पाना मुश्किल है कि किस प्रकार कोई अन्य व्यवस्था सादगी और सरलता में बाब द्वारा दिये गये बहाई कैलेण्डर से अधिक सुविधाजनक और अच्छी हो सकती है।

बहाई सहभोज वार्षिकोत्सव और उपवास के दिन

रिज़वान का त्योहार – (बहाउल्लाह की घोषणा – 21 अप्रैल – 2 मई (1863)

नवरोज़ का त्योहार – (नववर्ष) 21 मार्च

बाब की घोषणा – 23 मई (1844)

संविदा दिवस – 26 नवम्बर

बहाउल्लाह की जन्म–जयंती – 12 नवम्बर (1817)

बाब की जन्म–जयंती – 20 अक्टूबर (1819)

अब्दुल–बहा का जन्म – 23 मई (1844)

बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण – 29 मई (1892)

बाब की शहादत – 9 जुलाई (1850)

अब्दुल–बहा का स्वर्गारोहण – 28 नवम्बर (1921)

उपवास के 19 दिन होते हैं, जिसकी शुरूआत 'अला' माह के पहले दिन से होती है। 19 दिनों के उपवास के तुरंत बाद बहाई नववर्ष (नवरोज़) का त्योहार मनाया जाता है।

बहाई पावन दिवस जब काम से अवकाश लिया जाता है।

रिजवान का पहला दिन

रिजवान का नौवां दिन

रिजवान का बारहवां दिन

बाब की घोषणा का वार्षिकोत्सव

बहाउल्लाह की जन्म–जयंती का वार्षिकोत्सव

बाब की जन्म–जयंती का वार्षिकोत्सव

बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण की वार्षिकी

बाब की शहादत की वार्षिकी

नवरोज़ का त्योहार

नोट : अब्दुल–बहा ने नेरीज़, फारस के एक अनुयायी को सम्बोधित पाती में निम्नांकित अंश लिखा है :

वर्ष के नौ दिन ऐसे हैं जब काम पर जाना वर्जित है। पावन पुस्तक में इनमें से कुछ दिनों की चर्चा खास तौर पर की गई है। संविदा दिवस (अब्दुल–बहा के जन्मदिन) में काम करने की मनाही नहीं है। इस दिवस का उत्सव मनाना मित्रों की इच्छा पर छोड़ दिया गया है। इस दिवस को मनाना अनिवार्य नहीं माना गया है। बहाउल्लाह और बाब से सम्बन्धित दिवसों के दिन व्यापार, कार्य, उद्योग, कृषि आदि के काम से अवकाश लेना चाहिये। इसी प्रकार, किसी भी प्रकार की नौकरी, सरकारी या फिर कोई अन्य नौकरी करने वाले भी अवकाश पर रहें।

इस पाती के अनुसार अब्दुल–बहा के जन्म और स्वर्गारोहण के दिनों में भी अवकाश लेने की जरूरत नहीं है। किन्तु, इन दिनों में विशेष आयोजन अनिवार्य हैं।

पूर्व और पश्चिम में प्रशासनिक पदों पर काम करने वाले बहाई, सरकारी नौकरी में हों या फिर निजी कम्पनियों में, विशेष अवकाश के लिये आवेदन करें।

बहाई कैलेण्डर से सम्बन्धित "नबील्स नरेटिव" से चयनित अतिरिक्त सामग्री बदी कैलेण्डर (बहाई कैलेण्डर) हमने बाब की पुस्तक "किताब–ए–अस्मा" से लिया है। जैसा कि इन दिनों हमने देखा है कि कुछ अनुयायी बहाउल्लाह के बगदाद से कौस्टैंटिनोपल के लिये प्रस्थान करने के दिन को बदी

कैलेण्डर की शुरूआत का दिन मानने लगे हैं। हमने मिर्जा आका जान, बहाउल्लाह के लिपिक, से निवेदन किया कि वह इस सम्बन्ध में बहाउल्लाह की इच्छा से हमें अवगत करायें। बहाउल्लाह ने उत्तर दिया और कहा, "वर्ष साठ ए.एच. (1844), बाब के घोषणा का वर्ष अवश्य ही बदी कैलेण्डर की शुरूआत का वर्ष माना जाये।" बाब की घोषणा 1260 ए.एच. वर्ष के जमादियुल–अव्वल के पाँचवे दिन के पहले वाली शाम हुई थी। यह आदेश दिया गया है कि सौर कैलेण्डर को मान्यता दी जाये और वसंत सम्पात के दिन नवरूज़, बहाई कैलेण्डर के नव वर्ष का पहला दिन। इस प्रकार साठ के वर्ष के जमादियुल–अव्वल का पाँचवां दिन नवरोज़ के पैसठवें दिन पड़ता है और वही बदी कैलेण्डर का पहला वर्ष माना जायेगा।

...अक्का के किले को छोड़ने के तुरंत बाद जब बहाउल्लाह मलिक के घर में रह रहे थे, उन्होंने मुझे आदेश दिया कि मैं बदी कैलेण्डर की प्रतिलिपि तैयार करूँ और इस सम्बन्ध में अनुयायियों को विस्तार से निर्देश दूं। उसी दिन, जिस दिन मैंने उनका आदेश प्राप्त किया, मैंने गद्य और पद्य में कैलेण्डर की खास–खास बातों को कलमबद्ध किया और उनके समक्ष प्रस्तुत किया। पद्य में तैयार की गई प्रति अब उपलब्ध नहीं है, इसलिये यहां मैं गद्य में अनुमोदित प्रति प्रस्तुत कर रहा हूँ। सप्ताह के दिनों का नामांकरण इस प्रकार किया गया है :

दिन	**अरबी नाम**	**हिन्दी अनुवाद**	**प्रचलित हिन्दी नाम**
पहला	जलाल	प्रताप	शनिवार
दूसरा	जमाल	सौंदर्य	रविवार
तीसरा	कमाल	पूर्णता	सोमवार
चौथा	फिदाल	कृपा	मंगलवार
पाँचवाँ	ईदाल	न्याय	बुधवार
छठा	इस्तिजलाल	आधिपत्य	गुरूवार
सातवां	इस्तिकलाल	स्वतंत्रता	शुक्रवार

महीनों के नाम

माह	**अरबी नाम**	**हिन्दी अनुवाद**	**पहला दिन**
पहला	बहा	भाः	21 मार्च
दूसरा	जलाल	प्रताप	09 अप्रैल
तीसरा	जमाल	सौंदर्य	28 अप्रैल
चौथा	अज़मत	ऐश्वर्य	17 मई

पाँचवाँ	नूर	ज्योति	05 जून
छठा	रहमत	दया	24 जून
सातवां	कलीमात	शब्द	13 जुलाई
आठवाँ	कमाल	पूर्णता	01 अगस्त
नौवां	अस्मा	नाम	20 अगस्त
दसवां	इज्ज़त	सामर्थ्य	08 सितम्बर
ग्यारहवां	मशीयत	इच्छा	27 सितम्बर
बारहवां	इल्म	ज्ञान	16 अक्टूबर
तेरहवां	कुदरत	शक्ति	04 नवम्बर
चौदहवां	कौल	वाणी	23 नवम्बर
पन्द्रहवां	मसाइल	प्रश्न	12 दिसम्बर
सौलहवां	शरफ	सम्मान	31 दिसम्बर
सत्रहवां	सुल्तान	प्रभुत्व	19 जनवरी
अठारहवां	मुल्क	प्राधिकार	07 फरवरी
उन्नीसवां	अला	उच्चता	02 मार्च

अय्याम –ए–हा (अधिदिवस) 26 फरवरी से 1 मार्च (4 सामान्य रूप से और 5 अधिवर्ष में)

बाब ने 365 दिन, 5 घंटे और 50 मिनट के एक सौर वर्ष को मान्यता दी है, जिसमें 19 दिनों के 19 महीनों का प्रावधान है। इनमें अधिदिवसों को जोड़ दिया गया है। उन्होंने नये साल के पहले दिन को भाः (बहा) का दिन कहा है, जो नवरोज़ का दिन है। उन्होंने अला माह को उपवास का महीना कहा है और आदेश दिया है कि नवरोज़ का दिन उस की समाप्ति का सूचक होगा। चूंकि बाब ने बदी कलैण्डर में चार अधिदिवसों और दिन के कुछ प्रहरों का कोई स्थान निर्धारित नहीं किया था, बयान के लोग यह नहीं समझ पा रहे थे कि उन्हें कहां रखा जाये। इस समस्या का समाधान अक्का में 'किताब–ए–अकदस' के प्रकटीकरण के बाद मिल गया। बहाउल्लाह ने उन दिनों को अधिदिवस की संज्ञा दी और आदेश दिया कि वे दिन अला माह के तुरंत पहले रखें जायें, जो उपवास का महीना है। उन्होंने अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि ये अधिदिवस दान देने, उल्लास मनाने और परोपकार के कार्यों में बितायें जायें। साथ ही, उन्होंने आदेश दिया कि इन अधिदिवसों के तुरंत बाद उपवास का महीना प्रारम्भ हो जायेगा। मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि 'बयान' के कुछ लोग, जो मिर्जा याह्या के अनुयायी थे, अधिदिवस अला माह के तुरंत बाद रख लिया करते थे, जिससे उपवास के चार–पांच दिन कम हो जाते थे। यह 'बयान' में दिये

गये कैलेण्डर के अनुकूल नहीं था, जिसमें कहा गया है कि नवरोज़ अवश्य ही बहा माह का पहला दिन होगा और अवश्य ही अला माह के अंतिम दिन के तुरंत बाद मनाया जाये। दूसरे जो इस विरोधाभास से परिचित थे, अपना उपवास अला माह के पांचवें दिन से ही शुरू कर देते थे और अधिदिवसों को उपवास के दिनों में शामिल कर दिया करते थे। हर चौथे वर्ष अधिदिवसों की संख्या चार से पाँच हो जाती है। नवरोज़ का दिन 21 मार्च को ही पड़ता है, अगर वसंत सम्पात सूर्यास्त के बाद होता है तो अगले दिन नवरोज़ मनाया जायेगा।

इसके अलावा, बाब ने अरबी भाषा में प्रकटित लेखों में अपने उद्घोष की तारीख से वर्षों को 19 वर्षों के चक्र में विभाजित किया है। प्रत्येक चक्र में वर्षों के नाम इस प्रकार दिये हैं :

1. अलिफ	ए	2. बे	बी	3. अब	पिता
4. दाल	डी	5. बाब	द्वार	6. वाव	वी
7. अबद	शाश्वत	8. जेद	उदारता	9. बहा	भव्यता
10. हब्ब	प्रेम	11. बह्हाज	आनन्द	12. जवाब	उत्तर
13. अहद	एकाकी	14. बह्हाब	उदारता	15. विदाद	अनुराग
16. बदी	आरम्भ	17. बाही	प्रदीप्त	18. आभा	पूर्ण प्रकाशित
19. वाहिद	एकता				

उन्नीस सालों का एक चक्र वाहिद कहलाता है। उन्नीस चक्रों में योग को कुल्ल–ए–शय कहते हैं। वाहिद शब्द का सांख्यिक मूल्य उन्नीस है और कुल्ल–ए–शय की 361। वाहिद एकता का द्योतक है और है ईश्वर की एकता का प्रतीक।

बाब ने कहा है कि उनकी यह प्रणाली उनकी स्वीकृति पर निर्भर करती है "जिन्हें ईश्वर प्रकट करेगा"। उनकी ओर से कहा गया एक शब्द इसे सभी कालों के लिये स्थापित करने के लिये पर्याप्त होगा अथवा सदा के लिये रद्द कर देगा।

उदाहरण के लिये 21 अप्रैल, 1930 की तारीख, जो रिज़वान का पहला दिन है और जो "किताब–ए–अकदस" के अनुसार अवश्य ही दूसरे बहाई माह का तेरहवां दिन होना चाहिये और जो इस साल (1930 में) सोमवार के दिन पड़ा, बदी कैलेण्डर के अनुसार इस प्रकार वर्णित किया जाना चाहिये : "कमाल का दिन, पहले कुल्ल–ए–शय के पाँचवें वाहिद वर्ष बह्हाज के जलाल माह के कुदरत का दिन।"

बहाई तिथियाँ

172, बी.ई. (2015–2016)

	बहाई तिथि	ग्रेगोरिएन कलैण्डर के अनुसार
सहभोज तिथियाँ		
बहा (भा:)	1 बहा	21 मार्च 2015
जलाल (प्रताप)	1 जलाल	09 अप्रैल
जमाल (सौन्दर्य)	1 जमाल	28 अप्रैल
अजमत (ऐश्वर्य)	1 अजमत	17 मई
नूर (ज्योति)	1 नूर	05 जून
रहमत (दया)	1 रहमत	24 जून
कलिमात (शब्द)	1 कलिमात	13 जुलाई
कमाल (पूर्णता)	1 कमाल	01 अगस्त
असमा (नाम)	1 असमा	20 अगस्त
इज्जत (सामर्थ्य)	1 इज्जत	08 सितम्बर
मशीयत (इच्छा)	1 मशीयत	27 सितम्बर
इल्म (ज्ञान)	1 इल्म	16 अक्टूबर
कुदरत (शक्ति)	1 कुदरत	04 नवम्बर
कौल (वाणी)	1 कौल	23 नवम्बर
मसाइल (प्रश्न)	1 मसाइल	12 दिसम्बर
शरफ (सम्मान)	1 शरफ	31 दिसम्बर
सुल्तान (प्रभुत्व)	1 सुल्तान	19 जनवरी 2016
मुल्क (प्राधिकार)	1 मुल्क	07 फरवरी
अला (उच्चता)	1 अला	01 मार्च

पवित्र दिवस

नव–रोज़	1 बहा	21 मार्च 2015
रिज़वान का पहला दिन	13 जलाल	21 अप्रैल
रिज़वान का नवां दिन	2 जमाल	29 अप्रैल
रिज़वान का बारहवां दिन	5 जमाल	02 मई
बाब की उद्घोषणा	8 अजमत	24 मई
बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण	13 अजमत	29 मई
बाब का शहीद दिवस	17 रहमत	10 जुलाई
बाब का जन्म दिवस	10 कुदरत	13 नवम्बर
बहाउल्लाह का जन्म दिवस	11 कुदरत	14 नवम्बर
संविदा का दिवस	4 कौल	26 नवम्बर
अब्दुल–बहा का स्वर्गारोहण	6 कौल	28 नवम्बर

अन्य आयोजन

अय्याम–ए–हा	1 से 4 अय्याम–ए–हा	26 से 29 फरवरी 2016
उपवास के दिन	1 से 19 अला	01 से 19 मार्च 2016

नोट : बहाई दिन का अंत और नये दिन की शुरूआत सूर्यास्त के साथ होती है; परिणामतः जिस दिन सहभोज सभा अथवा बहाई पवित्र दिवस मनाया जाता है वह दिन ग्रेगोरियन कैलेण्डर की तारीख के एक दिन पूर्व सूर्यास्त के साथ शुरू हो जाता है। नवरोज़, इसके अनुसार 20 मार्च 2016 को मनाया जायेगा।